IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिक प्रस्थिति एवं भूमिका: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(पौड़ी गढ़वाल जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

डौली

पीएच.डी. शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग

इन्दिरा प्रियदर्शिनी राजकीय स्नातकोत्तर महिला

वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)

डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव

शोध निर्देशक / प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग

इन्दिरा प्रियदर्शिनी राजकीय स्नातकोत्तर महिला

वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)

सारांश

बेटियाँ समाज का सम्मान है। आज बेटियों के सम्मान व प्रतिष्ठा में स्वयं बेटियाँ व समाज दोनों ही उसकी आनबान शान में उसको हर संभव प्रयास में आगे बढ़ा रहे हैं। बेटियाँ बेटों के समान भावी जीवन को खुशहाल बनाती है। उसकी स्थिति में परिवर्तन सामाजिक संघर्ष का परिणाम है। आज बेटियाँ आसमां को छू रही है। हर असम्भव काम को संभव करके दिखा रही है। बेटियों की स्वतन्त्रता किसी अच्छे मुकाम को हासिल करना है। समाज में हमेशा से परम्परागत रूप से बेटों को आगे बढ़ने की छूट दी गयी, अच्छा पोषण बेटों को दिया गया, बेटों की हर प्रकार की अभिलाषाओं को पूरा करने का हर सम्भव प्रयास किया गया, किन्तु बेटी की इच्छाओं को मारा जाता था। आधुनिक समय में बेटियों ने यह सच कर दिया कि उन्हें दी गयी शिक्षा ने उन्हें सफल बनाया व उसने एक अच्छे समाज का निर्माण किया, साथ ही साथ वह समाज में सम्मान व प्रतिष्ठा का जीवन व्यतीत करती है। आज बेटियाँ हर उस क्षेत्र में हैं, जहां उन्हें कहा जाता था कि तुम्हारे बस की बात नहीं। बेटियों का आगे बढ़ना उसका व्यक्तिगत व समाज का सामूहिक प्रयास है अर्थात् परिवार के हर सदस्यों द्वारा बेटी को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी जाती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में देखे तो बेटियाँ लड़कों की तुलना अच्छे अंकों से आगे बढ़ रहीं हैं। महिलायें शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे निकल चुकी हैं। बेटियों ने जो शिक्षा के क्षेत्र में सम्भव प्रयास किया उसमें आज सभी अपना योगदान देने को तत्पर हैं, बेटियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान हर प्रकार की परीक्षा देने जाती हैं, और उनके परिवार के सदस्य इसमें उनका योगदान देते हैं। महिलायें परिवार और समाज में रहकर अनगिनत भूमिकायें बड़ी खूबसूरती से निभाती है। आज मिताली राज (क्रिकेटर), गुन्जन सक्सेना (सैन्य अधिकारी) जैसी महिलायें समाज में अन्य महिलाओं के हौसले को बुलन्द करती है। आज महिलायें स्वाभिमान से जी रही हैं। पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं ने अपना लोहा मनवाया है। आज की महिलायें पुरूषों पर भारी है। जीवन के हर संघर्ष को झेलकर आज महिलाओं ने अपनी आने वाली पीढ़ी की महिलाओं को मजबूती प्रदान की है। उसी के परिणामस्वरूप आज की महिलायें जिन्दगी के हर क्षेत्र में अपना मुकाम हासिल कर रही है। आधुनिक युग की महिलायें आज अपनी समाज की बुजुर्ग महिलाओं का भी हौसला बुलन्द कर रही है। बुजुर्ग महिलाओं का भी मानना है कि जो खुशहालीभरा जीवन हम नहीं जी सके वो हमारी बेटियां जी कर दिखाये। परिवार और समाज का नाम रोशन करे। घर की महिलायें अपनी बेटियों की शिक्षा के लिए गांव से सुदूर क्षेत्रों में रह रही है। स्वयं भी वहां पर रहकर स्वरोजगार से जुड़ रहीं हैं। आज समाज में महिलाओं की उच्च पद–प्रस्थिति उनके जीवन के मुकाम का ही हिस्सा है। महिलाओं को परिवार में सम्मान मिल रहा है और साथ ही साथ उनकी उचित राय को भी सम्मान दिया जा रहा है। पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक, वैवाहिक, व्यवसायिक निर्णय लेने में उन्हें स्वतन्त्रता है। आज महिलाओं ने स्वयं समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों का विरोध किया है। जिन बेटियों को समाज में व्याप्त कर्मकाण्डों या संस्कारों में भाग नहीं लेने दिया जाता था आज वहां भी बेटियाँ उन संस्कारों को निभा रही है, जैसे पिता के अन्तिम संस्कार में पिता को मुखाग्नि देना। आज महिलायें हर कठिनाई को पार कर आगे बढ़ रही है। परिवार की हर भूमिका को निभाने के साथ–साथ वह शिक्षा के क्षेत्र में पुरूषों से आगे

निकल रही हैं। अपने स्वास्थ्य के प्रति भी वह जागरूक रहती है। आज की महिलायें आत्मनिर्भर बनना चाहती है। आज की जागरूक महिलायें आने वाली पीढ़ी की महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा ऐसा हथियार है, जो हर स्त्री को समाज में जीवन जीने का ढंग सिखाता है। जो समाज पहले औरतों का अपने सामने बैठने भी नहीं दिया करता था, आज वहीं समाज स्त्री को पहले अपनी बात रखने का हक देता है। महिलायें इस कदर जागरूक हुई हैं, कि उन्हें यह पता है कि वह अपने बच्चों का भी भविष्य किस तरह बेहतर कर सकती है। समय कितना ही पीछे क्यों न हो, या कितने ही आगे क्यों न निकल जायें, जब तक स्त्री अपने प्रति जागरूक नहीं हो पाती तब तक वह किसी का भी भला नहीं कर सकती। कोई भी महिला समाज का भी भला तभी कर सकती है, जब उसमें आत्मज्ञान या आत्मविश्वास जागता है। रूढ़िवादि सोच को पीछे छोड़ जब वह जीवन जीने का तरीका सीख लेती है, तो कोई भला कौन उसे पीछे कर सकता है। महिला अकेले ही नहीं है, जो अपना भला कर रही है, या सोच रही है, उसके पीछे समाज के कई लोगों का योगदान भी है, उसे आगे बढ़ाने में। सहयोगी समाज के योगदान से ही आज यह सब सम्भव हुआ है। आज के दौर में मायके पक्ष का साथ तो बेटी के साथ रहता ही है, परन्तु ससुराल पक्ष वाले भी अपनी बहुओं का साथ देते हैं, उनकी शिक्षा में, उनकी तरक्की के दौर में, उनके हर फैसले में उनका साथ हमेशा रहता है। यदि किसी लड़की की पढ़ाई पूरी होने से पूर्व ही शादी हो जाती है, तो उसके ससुराल वाले उसकी पढ़ाई पूर्ण करवाने में उसका सहयोग देते हैं। पर यह बात भी तभी लागू होती है, जब स्वयं वह लड़की पढ़ने की इच्छा जाहिर करे। यह भी लड़कियों के आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता के प्रति जागरूकता को दर्शाता है। ग्रामीण समाज ही सभ्य समाज है, जहां पर बेटी और बहु दोनों का साथ दिया जाता है। ग्रामीण समाज में आज पुरूष औरत को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग करता है। यानि कि शिक्षा ने सिर्फ औरतों की ही शिक्षित नहीं किया है, बल्कि पुरूषों को भी रूढ़िवादी सोच को पीछे छोड़ आगे बढ़ने के लिए शिक्षित किया है। पुरूष में भी यह ज्ञान की लहर आयी है कि सिर्फ उसके आगे बढ़ने से ही समाज का भला नहीं होगा अपितु महिलाओं को भी आगे बढ़ाना होगा। आज पुरूष समाज अपनी बेटियों को आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण सहयोग देते हैं। उन्हें भी यह ज्ञान है कि बेटियां भी बेटों से कम नहीं।

बेटी है अनमोल रतन, शिक्षा से आगे बढ़ने का करे जतन।

शिक्षा ही है उसका हथियार, जो हर बाधा को करे पार।

इससे ही करे वह समाज का उद्धार।

शिक्षा अंधविश्वास, रूढ़िवादिता एवं संकीर्णता का निवारण, करके व्यक्ति का आधुनिकता की ओर अग्रसर करता है। विवेकशीलता, गतिशीलता, सहिष्णुता इत्यादि आधुनिकता के लक्षण शिक्षा के माध्यम से ही विकसित होते हैं। मनोवृत्तियों के निर्धारण मूल्यों का अंतरीकरण और जीवनशैली के स्वरूपीकरण शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। अतः आधुनिक समाज में व्यक्ति की शैक्षणिक प्रस्थिति उसकी व्यवसायिक सहभागिता को सुनिश्चित करती है। व्यवसाय विशेष में संलग्न लोगों में निहित शैक्षणिक भिन्नता का प्रभाव उनकी कार्यकुशलता एवं कार्य सम्पादन की स्थिति दिखायी पड़ता है।[1]

शपथ ग्रहण संबोधन में **श्रीमती पाटिल** ने कहा था कि– "मैं शिक्षा के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध हूँ और चाहती हूँ कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, लड़का हो या लड़की, आधुनिक शिक्षा से वंचित न रहें। मेरे लिए महिलाओं का सशक्तिकरण विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि मैं समझती हूँ कि इससे राष्ट्र को सशक्त बनाने में मदद मिलेगी।[2]

आज शिक्षा व्यवस्था ने ग्रामीण महिलाओं की स्थिति में सुधार किया है। सही शिक्षा व्यवस्था के कारण महिलाओं की दशा में सुधर पायी है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्थिति में सुधार का मुख्य कारण शिक्षा प्रबन्ध का सही होना है। महिलाओं ने आज इसी के बदौलत अपनी क्षमता का पहचाना और परिवार के साथ–साथ समाज के प्रति अपनी भूमिका को भी निभा रही है। आज यह बदलाव सरकारी योजनाओं द्वारा ही सम्भव हो पाया है। आज समाज एक साथ खड़ा होकर महिलाओं के प्रति एक सकारात्मक रूख अपना रहा है। दिलचस्प बात यह है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में महिला छात्रों का सकल नामांकन अनुपात 27.3 प्रतिशत है, वहीं उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण 2019–20 के मुताबिक, यह पुरुषों के लिए 26.9 प्रतिशत के आंकड़े से अधिक है, इसी सर्वेक्षण में यह पाया गया है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश लेने वाले कुल छात्रों में से 49 प्रतिशत लगभग 2 करोड़ महिलाए हैं। साथ ही दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के कुल नामांकित छात्रों में भी 44.5 प्रतिशत महिलाएं हैं। भारत जैसे तीसरी दुनिया के विकासशील देश में महिलाएं लगभग सभी क्षेत्रों में भेदभावों का सामना करती हैं, और सदियों पुरानी पितृसत्तात्मक

व्यवस्थाओं और परंपराओं ने महिलाओं के जीवन में और अधिक बाधाएं खड़ी की हैं। हालांकि देश साक्षरता और महिला शिक्षा के मुद्दे पर तेज़ी से प्रगति कर रहा है। प्रत्येक विकसित समाज के निर्माण में स्त्री एवं पुरूष दोनों की सहभागिता आवश्यक है। भावी पीढ़ी के रूप में व्यक्ति से लेकर परिवारए समाज तथा राष्ट्र तक के चहुँमुखी विकास की जिम्मेदारी में पुरुषों के साथ स्त्रियों की अपेक्षाकृत अधिक भागीदारी है। इस भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए ही परिवार की धुरी, महिला का सशक्तीकरण जरूरी है और सशक्तीकरण के लिए शिक्षा।[3]

शिक्षा आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण के लिए पहला और मूलभूत साधन है। शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका दर्ज करा सकती है। दुनिया के जो भी देश आज समृद्ध और शक्तिशाली हैं, वे शिक्षा के बल पर ही आगे बढ़े हैं। इसलिए आज समाज की आधी आबादी अर्थात महिलाएं जो कि विकास की मुख्य धारा से बाहर है, उन्हे शिक्षित बनाना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। इस संदर्भ में राधाकृष्णन आयोग ने कहा है. **'स्त्रियों के शिक्षित हुए बिना किसी समाज के लोग शिक्षित नहीं हो सकते।'**[4]

यदि सामान्य शिक्षा स्त्रियों या पुरूषों मे से किसी एक को देने की विवशता हो, तो यह अवसर स्त्रियों को ही दिया जाना चाहिए, क्योकि ऐसा होने पर निश्चित रूप से वह शिक्षा उनके द्वारा अगली पीढ़ी तक पहुँच जाएगी। **इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह बात स्वीकार की गई है कि महिला शिक्षा का महत्व न केवल समानता के लिए, बल्कि सामाजिक विकास की प्रक्रिया को तेज करने के लिए भी जरूरी है।** शिक्षा महिलाओं को उन सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करेगी जो अभी भी भारतीय समाज को पीड़ित करती हैं। एक बौद्धिक रूप से प्रबुद्ध महिला दहेज, वधू.दाह, वैवाहिक बलात्कार, सामान्य रूप से बलात्कार, छेड़छाड़ और यौन उत्पीड़न, और महिलाओं के वस्तुकरण के खिलाफ सक्रिय रूप से लड़ेगी। वह स्त्री द्वेष और पितृसत्ता से भी लड़ेंगी। दिसंबर 2012 के दिल्ली सामूहिक बलात्कार के बाद हुए व्यापक विरोध प्रदर्शनों को देखें। विरोध करने वाली अधिकांश महिलाएं युवा और शिक्षित थीं।

शिक्षा, आज, महिलाओं को पारंपरिक रूप से उनके लिए अच्छे माने जाने वाले व्यवसायों से परे जाने में सक्षम बना रही है. जैसे चिकित्सा, नर्सिंग, शिक्षण, लाइब्रेरियन आदि। आज महिलाएं मॉडल, अभिनेताए लड़ाकू पायलट, जिम प्रशिक्षक, पुलिस, लेखक, इंजीनियर, आर्किटेक्ट, बन रही हैं। पत्रकार, वैज्ञानिक, कॉर्पोरेट, कानून, फिल्म निर्माण और क्या नहीं. वे कांच की छत को तोड़ रहे हैं। आज की बौद्धिक रूप से मुक्त और विमुक्त नारी भी अपनी जीविका कमा रही है। अब उसे अपना घर, भोजन, वस्त्र और आश्रय देने के लिए किसी पुरुष पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। वह अपना पेट भर सकती है, अपना घर खरीद सकती है और अपना भरण.पोषण कर सकती है। आजए महिलाएं बिना पुरुषों के अच्छा जीवन जी रही हैं. उन्हें अब उन पुरुषों के लिए दूसरी भूमिका निभाने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है।

महात्मा गाँधी के अनुसारः ''हमारा पहला प्रयास अधिक से अधिक महिलाओं को उनके वत र्मान स्थिति के प्रति जागरूक करना होना चाहिए।'' यूएनडीपी नारी सशक्तिकरण को सिर्फ इसलिए महत्व नहीं देता कि यह मानव अधिकार है बल्कि इसके माध्यम से हमारे सदियों से चले आ रहे विकास के लक्ष्यों को पूरा करने का और सतत् विकास के मार्ग में लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय को भी शामिल करना है। लैंगिक समानता, गरीबी में कमी, लोकतांत्रिक शासन, संकट की रोकथाम, पर्यावरण और सतत् विकास में महिलाओं की भागीदारी, सशक्तिकरण को एकीकृत करने के लिए वैश्विक और राष्ट्रीय प्रयासों का समन्वय करता है। सशक्तिकरण से अभिप्राय आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक शक्ति को व्यक्ति और समुदाय में बढ़ाने से है। इसके फलस्वरूप क्षमतावान, सशक्त, विकासशील और आत्मविश्वास से युक्त महिला समूह निर्मित हो सकता है। महिलाओं और लड़कियों के लिए एक वैश्विक अभियान, संयुक्त राष्ट्र महिला शाखा को दुनिया भर में स्त्रियों की जरूरतों को पूरा करने में तेजी लाने के लिए स्थापित किया गया।

महिला साक्षरता दर अवलोकन–

भारत में 15वीं आधिकारिक जनगणना की गणना वर्ष 2011 में की गई थी। भारत जैसे देश में साक्षरता सामाजिक और आर्थिक विकास का मुख्य आधार है। 1947 में जब भारत में ब्रिटिश शासन समाप्त हुआ तब साक्षरता दर सिर्फ 12 प्रतिशत थी। पिछले कुछ वर्षों में, भारत सामाजिक, आर्थिक और विश्व स्तर पर बदल गया है। 2011 की जनगणना के बाद, साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत पाई गई। वयस्क साक्षरता दर की तुलना में यहाँ युवा साक्षरता दर लगभग 9 प्रतिशत अधिक है। हालाँकि यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि लगती है, फिर भी यह चिंता का विषय है कि भारत में अभी भी इतने लोग पढ़.लिख भी नहीं सकते हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त नहीं करने वाले बच्चों

की संख्या अभी भी अधिक है। हालांकि सरकार ने कानून बनाया है कि 14 साल से कम उम्र के हर बच्चे को मुफ्त शिक्षा मिलनी चाहिए, लेकिन निरक्षरता की समस्या अभी भी बड़ी है। अब अगर हम भारत में महिला साक्षरता दर पर विचार करें, तो यह पुरुष साक्षरता दर से कम है क्योंकि कई माता.पिता अपनी महिला बच्चों को स्कूल नहीं जाने देते हैं। बल्कि कम उम्र में ही शादी कर देते हैं। हालांकि बाल विवाह का स्तर बहुत कम हो गया है, फिर भी यह होता है। कई परिवार, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, यह मानते हैं कि एक लड़का होना एक लड़की होने से बेहतर है। तो लड़के को सभी लाभ मिलते हैं। आज, साक्षरता दर 2011 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता का स्तर 65.46 प्रतिशत है जहां पुरुष साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत है। भारत में साक्षरता दर हमेशा चिंता का विषय रही है लेकिन साक्षरता के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए कई गैर सरकारी संगठनों की पहल और सरकारी विज्ञापन, अभियान और कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। साथ ही सरकार ने महिला समानता के अधिकार के लिए कड़े नियम बनाए हैं।[5]

क्र0 सं0	राज्य	साक्षरता	पुरुष	महिला	% परिवर्तन
-	भारत	74.04	82.14	65.46	8.66
1	केरल	94.00	96.11	92.07	3.14
2	लक्षद्वीप	91.85	95.56	87.95	5.19
3	मिजोरम	91.33	93.35	89.27	2.53
4	गोवा	88.70	92.65	84.66	6.69
5	त्रिपुरा	87.22	91.53	82.73	14.03
6	दमन और दीव	87.10	91.54	79.55	8.92
7	अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह	86.63	90.27	82.43	5.33
8	दिल्ली	86.21	90.94	80.76	4.54
9	चंडीगढ़	86.05	89.99	81.19	4.11
10	पुदुचेरी	85.85	91.26	80.67	4.61
11	हिमाचल प्रदेश	82.80	89.53	75.93	6.32
12	महाराष्ट्र	82.34	88.38	75.87	5.46
13	सिक्किम	81.42	86.55	75.61	12.61
14	तमिलनाडु	80.09	86.77	73.44	6.64
15	नगालैंड	79.55	82.75	76.11	12.96
16	उत्तराखंड	78.82	87.40	70.01	7.2
17	गुजरात	78.03	85.75	69.68	8.89
18	मणिपुर	76.94	83.58	70.26	10.33
19	पश्चिम बंगाल	76.26	81.69	70.54	7.62
20	दादरा और नगर हवेली	76.24	85.17	64.32	18.61
21	पंजाब	75.84	80.44	70.73	6.19
22	हरियाणा	75.55	84.06	65.94	7.64
23	कर्नाटक	75.36	82.47	68.08	8.72
24	मेघालय	74.43	75.95	72.89	11.87
25	ओडिशा	72.87	81.59	64.01	9.79

क्र0 सं0	राज्य	साक्षरता	पुरुष	महिला	% परिवर्तन
26	असम	72.19	77.85	66.27	8.94
27	छत्तीसगढ	70.28	80.27	60.24	5.62
28	मध्य प्रदेश	69.32	78.73	59.24	5.58
29	उत्तर प्रदेश	67.68	77.28	57.18	11.41
30	जम्मू और कश्मीर	67.16	76.75	56.43	11.64
31	आंध्र प्रदेश	67.02	74.88	59.15	6.55
32	झारखंड	66.41	76.84	55.42	12.85
33	राजस्थान	66.11	79.19	52.12	5.7
34	अरुणाचल प्रदेश	65.38	72.55	57.70	11.04
35	बिहार	61.80	71.20	51.50	14.8

5 स्त्रोत: भारत के जनगणना आयुक्त और महापंजीयक कार्यालय द्वारा 2011

2021 में भारत में महिला साक्षरता दर 91.95 प्रतिशत थी। 2010–2021 के बीच भारत में महिला साक्षरता दर में 14. 4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। साल दर साल आधार पर 2021 में साक्षरता दर में 0.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।[6]

उत्तराखण्ड में विश्वविद्यालय शिक्षा की उपलब्धता– 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की जनसंख्या के लिए लिंग के आधार पर शैक्षिक स्तर स्नातक और उससे ऊपर–

Age - group	Total Population			Graduation and above			Post graduate degree other than technical degree			Technical degree or diploma equal to degree or post graduate degree Engineering and technology		
	Persons	Males	Females	Persons	Males	Females	Persons	Males	Females	Persons	Males	Females
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
UTTARAKHAND												
Total	6957284 (100)	3485332 (100)	3471952 (100)	910288(100)	512068 (14.7)	398220 (11.5)	318054 (4.6)	165313 (4.7)	152741 (4.4)	70881 (1.0)	52549 (1.5)	18332 (0.5)
15-19	1124110 (100)	588483 (100)	535627 (100)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)
20-24	970068 (100)	484614 (100)	485454 (100)	194627 (20.1)	91453 (18.9)	103174 (21.3)	44788 (4.6)	15743 (3.2)	29045 (6.0)	24294 (2.5)	16859 (3.5)	7435 (1.5)
25-29	810184 (100)	397363 (100)	412821 (100)	186822 (23.1)	91236 (23.0)	95586 (23.2)	67529 (8.3)	27902 (7.0)	39627 (9.6)	16492 (2.0)	11176 (2.8)	5316 (1.3)
30-34	698300 (100)	345427 (100)	352873 (100)	143852 (20.6)	77903 (22.6)	65949 (18.7)	56741 (8.1)	28329 (8.2)	28412 (8.1)	9196 (1.3)	6680 (1.9)	2516 (0.7)
35-59	2437205 (100)	1218236 (100)	1218969 (100)	331010 (13.6)	211331 (17.3)	119679 (9.8)	130300 (5.3)	79855 (6.6)	50445 (4.1)	16918 (0.7)	14152 (1.2)	2766 (0.2)
60+	900809 (100)	441897 (100)	458912 (100)	52238 (5.8)	39165 (8.9)	13073 (2.8)	18142 (2.0)	13168 (3.0)	4974 (1.1)	3825 (0.4)	3568 (0.8)	257 (0.1)
Age not stated	16608 (100)	9312 (100)	7296 (100)	1739 (10.5)	980 (10.5)	759 (10.4)	554 (3.3)	316 (3.4)	238 (3.3)	156 (0.9)	114 (1.2)	42 (0.6)

Garhwal

Total	486075 (100)	222305 (100)	263770 (100)	39791 (9.2)	23216 (11.9)	16575 (6.9)	16540 (3.8)	9315 (4.8)	7225 (3.0)	1970 (0.5)	1400 (0.7)	570 (0.2)
15-19	74266 (100)	37469 (100)	36797 (100)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	0 (0.0)
20-24	58033 (100)	25524 (100)	32509 (100)	12310 (18.5)	5052 (19.6)	7258 (17.7)	2364 (4.5)	799 (3.5)	1565 (5.3)	718 (1.4)	457 (2.0)	261 (0.9)
25-29	47270 (100)	20116 (100)	27154 (100)	11439 (18.6)	5082 (21.6)	6357 (16.4)	3394 (8.1)	1465 (8.3)	1929 (8.0)	467 (1.1)	298 (1.7)	169 (0.7)
30-34	43999 (100)	19830 (100)	24169 (100)	9482 (15.0)	4905 (19.2)	4577 (11.7)	2833 (7.5)	1532 (2.2)	1301 (6.2)	253 (0.7)	200 (1.2)	53 (0.3)
35-59	175410 (100)	80327 (100)	95083 (100)	22813 (9.2)	15415 (14.2)	7398 (5.2)	6978 (4.5)	4748 (6.8)	2230 (2.6)	464 (0.3)	388 (0.6)	76 (0.1)
60+	86219 (100)	38568 (100)	47651 (100)	3136 (3.0)	2701 (5.4)	435 (1.1)	958 (1.3)	762 (2.3)	196 (0.5)	60 (0.1)	52 (0.2)	8 (0.0)
Age not stated	878 (100)	471 (100)	407 (100)	93 (7.2)	51 (7.9)	42 (6.2)	13 (1.9)	9 (2.2)	4 (1.5)	8 (1.2)	5 (1.2)	3 (1.1)

7 स्त्रोतः District Census Handbook Garhwal 2011 Page 30

उपरोक्त तालिका में 15 और उससे अधिक आयु वर्ग की जनसंख्या के लिए स्नातक और उच्च स्तर की शिक्षा का वितरण प्रस्तुत करती है। उत्तराखण्ड राज्य की कुल जनसंख्या में से 13.1 प्रतिशत स्नातक और उससे ऊपर के स्तर के हैं, 4.6 प्रतिशत तकनीकी डिग्री के अलावा स्नातकोत्तर हैं और 1.0 प्रतिशत डिग्री या स्नातकोत्तर डिग्री इंजीनियरिंग के बराबर तकनीकी डिग्री या डिप्लोमा हैं और तकनीकी। पुरूष और महिला आबादी में लगभग समान प्रवृत्ति देखी जाती है। उच्चतम प्रतिशत (23.1) 25–29 आयु वर्ग में तकनीकी डिग्री के अलावा स्नातकोत्तर में 8.3 प्रतिशत और इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी स्तर की शिक्षा में 2.5 प्रतिशत देखा गया है। 20–24 आयु वर्ग राज्य की पुरूष और महिला आबादी में समान प्रवृत्ति देखी गई है। इस स्तर की शिक्षा में सबसे कम प्रतिशत 60+ आयु वर्ग में पुरूष और महिला आबादी दोनों में देखा गया है। लगभग ऐसा ही रूझान जिले में भी देखा जा सकता है। स्नातक और उससे ऊपर की शिक्षा में, उच्चतम प्रतिशत (18.6) कुल जनसंख्या के लिए पाया जाता है, 21.6 प्रतिशत पुरूष आबादी के लिए 25–29 आयु वर्ग में जबकि 17.7 प्रतिशत 20–24 आयु वर्ग की महिला आबादी के लिए है। तकनीकी डिग्री के अलावा स्नातकोत्तर डिग्री में कुल जनसंख्या का उच्चतम प्रतिशत (8.1) तथा 25–29 आयु वर्ग की महिला जनसंख्या का 8.0 प्रतिशत जबकि 30–34 आयु वर्ग की औपचारिक जनसंख्या का 9.1 प्रतिशत है। 20–24 आयु वर्ग में डिग्री या पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री के समकक्ष तकनीकी डिग्री या डिप्लोमा कुल जनसंख्या में निम्नतम इस स्तर की शिक्षा का प्रतिशत 60+ आयु वर्ग में देखा जाता है। अन्य शैक्षिक स्तर में, राज्य और जिला स्तर दोनों में प्रतिशत हिस्सा नगण्य है।[7]

पौड़ी जनपदः– जनसंख्याः– जनपद में कुल महिला जनसंख्या एवं ग्रामीण महिला जनसंख्या (जनगणना 2011)

आयु	कुल स्त्रियां	ग्रामीण स्त्रियां
1	**2**	**3**
सभी आयु	360442	306539
0-09	59417	50652
10-14	37255	32002
15-19	36797	31422
20-24	32509	27212
25-29	27154	22169
30-34	24169	19481
35-39	23101	18786
40-44	20877	17239
45-49	18753	15724
50-54	17511	15010
55-59	14841	13049

60-64	14838	13462
65-69	11212	10268
70-74	9633	8876
75-79	5578	5089
=80	6390	5756
आयु नहीं बताई	407	342

8 स्त्रोतः सांख्यिकीय पत्रिका पौड़ी गढ़वाल वर्ष–2021, कार्यालय अर्थ एवं सांख्याधिकारी पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड), पेज न0 22

लिंग–अनुपातः–

प्रति एक हजार (1000) पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या लिंग अनुपात कहलाती है। वर्तमान में भारत में सबसे कम लिंगानुपात वाला राज्य हरियाणा है। जहां पर लिंगानुपात केवल 879 है, जबकि सबसे अधिक लिंगानुपात वाला राज्य केरल है।

राज्य और जिले का लिंग अनुपात 1901–2011

राज्य				जिला		
जनगणना वर्ष	कुल	ग्रामीण	नगरीय	कुल	ग्रामीण	नगरीय
1	2	3	4	5	6	7
1901	918	943	668	1,032	1,058	375
1911	907	944	585	1,036	1,070	344
1921	915	902	547	1,084	1,114	420
1931	913	948	604	1,069	1,087	468
1941	907	953	570	1,077	1,108	374
1951	940	990	669	1,137	1,179	495
1961	947	995	695	1,163	1,221	527
1971	940	990	721	1,119	1,162	642
1981	939	987	767	1,091	1,148	687
1991	940	982	810	1,058	1,118	705
2001	964	1,007	850	1,104	1,154	821
2011	**963**	**1,000**	**884**	**1,103**	**1,144**	**917**

9 स्त्रोतः District Census Handbook Garhwal 2011 Page no. 40

उपरोक्त सारणी पुष्टि करती है कि वर्ष 1901 से 2011 की जनगणना के दौरान राज्य में लिंगानुपात 918 से 963 की सीमा है। वर्ष 2001 में उच्चतम लिंगानुपात 964 देखा गया है। राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात 902 है। वर्ष 1921 से 2001 में 1007 जबकि नगरीय क्षेत्रों में यह वर्ष 1921 में 547 से वर्ष 2011 में 884 तक रहा। जनपद स्तर पर 1901 से 2011 तक लिंग अनुपात अनुकूल पाया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में ही देखा जाता है। शहरी क्षेत्रों में लिंग अनुपात 1911 में 344 से 2011 में 917 के बीच था।

साहित्य–पुनरावलोकनः–

प्रज्ञा शर्मा (2001) ने 'महिला विकास एवं सशक्तिकरण' पुस्तक में बताया है कि महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए अनेक कानून बने हैं, यदि महिलायें इन कानूनों के सम्बन्ध में जानकारी रखें तो वे सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से सशक्त बन सकती हैं।[10]

अजित एन.पी. अब्दुल (2015) भारत में महिला सशक्तिकरणः– लेखक के अनुसार इस किताब में यह बताया गया है कि भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने में राजनैतिक, आर्थिक, शिक्षा, कृषि और आदि का अहम योगदान रहा है, और इसमें यह भी बताया गया है कि स्वास्थ्य स्थिति और नई–नई चुनौतियों का सामना किस प्रकार किया जाये।[11]

रत्तू डॉ. कमला (2006) मीडिया क्रान्ति और महिलायेंः– इन्होंने यह स्पष्ट किया है कि महिलाओं को संचार के प्रति जागरूक होना चाहिए और बदलते परिवेश के अनुसार जागरूक रहना चाहिए। इसमें संचार के प्रति महिलाओं की भागीदारी सभी के समान होनी चाहिए, और इसके द्वारा महिलाओं का सामाजिक परिदृश्य हो, पश्चिमी मीडिया में और उसकी संस्कृति में महिला–दर्शन कैसा हो और सूचना–क्रांति में महिलाओं की बदलती प्रकृति बताया गया है।[12]

रामानम्बा एम.वी. (2005) मीडिया और महिला विकासः– लेखक ने इसमें बताया है कि समाज में महिलाओं की भूमिका क्या होती है, कैसी होती है और कैसी होनी चाहिए। महिलाओं का समाज में स्तर पुरूषों के समान होन चाहिए और समाज में अपने आपको और अपने विचारों को सभी के समान महिलायें रख सके।[13]

गर्ग, मृदुला (2008):– के अध्ययन के अनुसार स्वतंत्रता प्राप्ति 1950 के पश्चात् महिलाओं की स्थिति में पर्याप्त परिवर्तन आया है। संरचनात्मक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण महिलाओं को न केवल शिक्षा, रोजगार तथा राजनीतिक साझेदारी के समान अवसर प्राप्त हुये हैं, साथ ही महिलाओं के शोषण में भी कमी आयी है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को संगठन संरचना की भी स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। ताकि वे संगठनात्मक रूप से अपनी समस्याओं का हल करने के उद्देश्य से आगे आ सके।[14]

शोध प्रारूप एवं प्रविधिः–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखते हुए अन्वेषणात्मक तथा वर्णानात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया। मेरे शोध विषय में अध्ययन का क्षेत्र उत्तराखण्ड के पौड़ी जिले में स्थित ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत 15 विकासखण्ड सम्मिलित हैं। शोध कार्य हेतु जनपद पौड़ी गढ़वाल के समस्त 15 विकासखण्डों की ग्रामीण महिलाओं की समग्र जनसंख्या में कोटा (अंश) निदर्शन के आधार पर सर्वप्रथम पौड़ी गढ़वाल जनपद को 15 विकासखण्डों में विभाजित कर प्रत्येक वर्ग में से चुनी जाने वाली इकाइयों (30) की संख्या निर्धारित कर सउद्देश्यपूर्ण निदर्शन के आधार पर 450 उत्तरदाताओं का चयन कर लिया गया है। अध्ययन में ग्रामीण महिलाओं की शैक्षणिक जानकारी प्राप्त की गई। प्रस्तुत शोध में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों पर आधारित है। आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिये अवलोकन, अनुसूची व साक्षात्कार पद्धति को अपना गया है।

उत्तदात्रियों का शिक्षा के आधार पर विवरण

सारणी संख्या 1

क्रमांक	शैक्षिक विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	निरक्षर	8	1.78
2.	प्राथमिक	15	3.33
3.	माध्यमिक	10	2.22
4.	हाईस्कूल	42	9.33
5.	इण्टर	68	15.11
6.	स्नातक	134	29.78
7.	परास्नातक	101	22.45
8.	डिप्लोमा/तकनीकी श िशिक्षा/अन्य	72	16.00
	कुल योग	**450**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर निरक्षर उत्तरदात्रियों की संख्या 8 (1.78 प्रतिशत) है, प्राथमिक स्तर तक पढ़ी उत्तरदात्रियों की संख्या 15 (3.33 प्रतिशत) है, माध्यमिक स्तर तक पढ़ी उत्तरदात्रियों की संख्या 10 (2.22 प्रतिशत) है, हाईस्कूल स्तर तक पढ़ी उत्तरदात्रियों की संख्या 42 (9.33 प्रतिशत) है, इण्टरमीडिएट तक पढ़ी

उत्तरदात्रियों की संख्या 68 (15.11 प्रतिशत) है, वहीं स्नातक स्तर तक पढ़ी या पढ़ने वाली उत्तरदात्रियों की संख्या 134 (29.78 प्रतिशत) है, व स्नातकोत्तर स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या 101 (22.45 प्रतिशत) है, इसके अतिरिक्त अन्य शिक्षा स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या 72 (16 प्रतिशत) है।

आयु के आधार पर शैक्षिक स्थिति का विवरण

सारणी संख्या 2

आयु	शैक्षिक स्थिति									
	निरक्षर	प्राथमिक	माध्यमिक	हाईस्कूल	इण्टर	स्नातक	परास्नातक	डिप्लोमा तकनीकी शिक्षा अन्य	योग	प्रतिशत
20-30					22	70	65	46	203	45.11
30-40			2	5	26	42	29	19	123	27.34
40-50		3	4	24	12	14	5	7	69	15.33
50-60	2	8	4	13	4	8	2	0	41	9.11
60 +	6	4	0	0	4	0	0	0	14	3.11
कुल योग	8	15	10	42	68	134	101	72	450	100

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर **निरक्षर उत्तरदात्रियों** की संख्या 8 है, जिसमें 50–60 आयु वर्ग की महिलाओं की संख्या 2 और 60 से अधिक आयु वर्ग की महिलाओं की संख्या 6 है। **प्राथमिक स्तर** की पढ़ी–लिखी उत्तरदात्रियों की संख्या 15 है, जिसमें से 40–50 आयु वर्ग की महिला उत्तरदात्री 3, 50–60 आयु वर्ग की उत्तरदात्रियों की संख्या 8 तथा 60 से अधिक आयु वर्ग की महिलाओं की संख्या 4 है। **माध्यमिक स्तर** की उत्तरदात्रियों की संख्या 10 है, जिसमें से 30–40 आयु वर्ग की महिला 2, 40–50 आयु वर्ग की 4, 50–60 आयु वर्ग 4 उत्तरदात्रियां हैं। **हाईस्कूल तक** पढ़ी–लिखी उत्तरदात्रियों की संख्या 42 है, जिसमें से 30–40 आयु वर्ग के बीच की उत्तरदात्रियों की संख्या 5, 40–50 आयु वर्ग की उत्तरदात्रियां 24, 50–60 आयु वर्ग की उत्तरदात्रियां 13 हैं। **इण्टरमीडिएट तक** पढ़ी–लिखी उत्तरदात्रियों की संख्या 68 है, जिसमें से 20–30 आयु वर्ग की उत्तरदात्रियों की संख्या 22, 30–40 आयु वर्ग की 26, 40–50 आयु वर्ग की 12, 50–60 आयु वर्ग की 4, और 60 से अधिक आयु वर्ग की 4 उत्तरदात्रियां हैं। **स्नातक स्तर** की उत्तरदात्रियों की संख्या 134 है, जिसमें से 20–30 आयु वर्ग की 70, 30–40 आयु वर्ग की 42, 40–50 आयु वर्ग की 14, व 50–60 आयु वर्ग की 8 उत्तरदात्रियां हैं। इसी क्रम में **स्नातकोत्तर वर्ग में** 20–30 आयु वर्ग की 65 उत्तरदात्रियां, 30–40 आयु वर्ग में 29, 40–50 में मध्य 5 उत्तरदात्रियां, 50–60 आयु वर्ग की 2 उत्तरदात्रियां हैं। **अन्य** शिक्षा ग्रहण की हुई उत्तरदात्रियां 72 हैं, जिसमें से 20–30 आयु वर्ग की 46 उत्तरदात्रियां, 30–40 आयु वर्ग की 19 उत्तरदात्रियां, 40–50 के मध्य 7 उत्तरदाात्रियां हैं। **अर्थात्** 20–30 आयु वर्ग की महिलाओं का शैक्षिक प्रतिशत 45.11, 30–40 आयु वर्ग की महिलाओं का शैक्षिक प्रतिशत 27.34, 40–50 आयु वर्ग की महिलाओं का शैक्षिक प्रतिशत 15.33, 50–60 आयु वर्ग की महिलाओं का प्रतिशत 9.11 तथा 60 से अधिक आयु वर्ग की महिलाओं का शैक्षिक प्रतिशत 3.11 है।

शैक्षणिक स्थिति का जाति के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

सारणी संख्या 3

शैक्षणिक स्थिति	जातीय स्तर			योग
	सामान्य	अन्य पिछड़ा वर्ग	अनुसूचित जाति	
निरक्षर	2	1	5	8
प्राथमिक	9	1	5	15
माध्यमिक	8	0	2	10
हाईस्कूल	22	3	17	42
इण्टर	43	1	24	68
स्नातक	89	10	35	134
परास्नातक	73	6	22	101
डिप्लोमा / तकनीकी शिक्षा / अन्य	52	2	18	72
कुल योग	**298**	**24**	**128**	**450**

उपरोक्त सारणी को जाति के आधार पर शिक्षित उत्तरदात्रियों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें **सामान्य जाति की उत्तरदात्रियां का शैक्षिक स्तर निम्न प्रकार से है**: निरक्षर उत्तरदात्रियां 2, प्राथमिक स्तर की उत्तरदात्रियां 9, माध्यमिक स्तर की उत्तरदात्रियां 8, हाईस्कूल उत्तरदात्रियों की संख्या 22, इण्टर तक की उत्तरदात्रियों की संख्या 43, स्नातक स्तर की उत्तरदात्रियां 89, स्नातकोत्तर तक की उत्तरदात्रियों की संख्या 73, व अन्य स्तर के शिक्षा स्तर की 32 उत्तरदात्रियां हैं। वहीं सारणी के आधार पर **पिछड़े वर्ग की उत्तरदात्रियों की कुल संख्या 24 है**, जिसमें निरक्षर उत्तरदात्रियों की संख्या 1, प्राथमिक स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या 1, माध्यमिक स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या शून्य, हाईस्कूल तक पढ़ी उत्तरदात्रियों की संख्या 3, इण्टर तक पढ़ी उत्तरदात्रियों की संख्या 1, और स्नातक स्तर की पढ़ी या पढ़ने वाली उत्तरदात्रियों की संख्या 10 है, तथा स्नातकोत्तर स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या 06 है वहीं अन्य स्तर की शिक्षा ग्रहण करने वाली या शिक्षा ग्रहण की हुई उत्तरदात्रियों की संख्या 2 है। सारणी के आधार पर **अनुसूचित जाति की उत्तरदात्रियों के शिक्षा का स्तर निम्न प्रकार से है**: अनुसूचित जाति के कुल उत्तरदात्रियों की संख्या 128 है, इसमें से निरक्षर उत्तरदात्रियों की संख्या 5 है, प्राथमिक स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या 5 है, माध्यमिक स्तर की उत्तरदात्रियां 02 है, वहीं हाईस्कूल स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या 17 है, तथा इण्टर तक की उत्तरदात्रियों की संख्या 24 है, स्नातक स्तर की उत्तरदात्रियां 35 व स्नातकोत्तर स्तर की उत्तरदात्रियां 22 हैं, वहीं अन्य शिक्षा ग्रहण करने वाली उत्तरदात्रियां 18 हैं।

1. क्या आपके परिवार में महिलाओं को पुरूषों के समान शैक्षिक प्राप्त अधिकार हैं?

सारणी संख्या 4

क्र0 सं0	पुरूषों के समान महिलाओं के शैक्षिक अधिकार का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	380	84.44
2.	नहीं	70	15.56
	योग	450	100.00

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों से पता चलता है कि 84.44 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के परिवार में महिलाओं को पुरूषों के समान शैक्षिक अधिकार प्राप्त हैं, जबकि 15.56 उत्तरदात्रियों के परिवार में महिलाओं को पुरूषों के समान शैक्षिक अधिकार प्राप्त नहीं हैं।

4. क्या आपके परिवार के सदस्य महिला शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?

सारणी संख्या 5

क्र0 सं0	ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा के प्रति परिवार के सदस्यों का जागरूकता का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	380	84.44
2.	नहीं	70	15.56
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 84.44 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के परिवार के सदस्य महिला शिक्षा के प्रति जागरूक हैं, जबकि 15.56 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के परिवार के सदस्य महिला शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं हैं।

आपके शिक्षा के प्रति आपके माता–पिता का क्या दृष्टिकोण है?

सारणी संख्या 6

क्र0 सं0	उत्तरदात्रियों की शिक्षा के प्रति माता–पिता के दृष्टिकोण का का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अनुकूल	366	81.33
2.	उदासीन	51	11.33
	प्रतिकूल	33	7.34
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के अनुसार 81.33 प्रतिशत उत्तरात्रियों के माता–पिता का उत्तरदात्रियों की शिक्षा के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण है, जबकि 11.33 प्रतिशत उत्तदात्रियों के माता–पिता का उनकी शिक्षा के प्रति उदासीन है, तथा 7.34 प्रतिशत माता–पिता का अपने बेटियों की शिक्षा के प्रति प्रतिकूल दृष्टिकोण है।

क्या आपने अपनी आकांक्षाओं के अनुसार शिक्षा प्राप्त की है?

सारणी संख्या 7

क्र0 सं0	उत्तरदाताओं की आकांक्षाओं के अनुसार शिक्षा प्राप्ति का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	307	68.22
2.	नहीं	143	31.78
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 68.22 प्रतिशत उत्तदात्रियों ने अपनी आकांक्षाओं के अनुसार शिक्षा प्राप्त की है, जबकि 31.78 उत्तरदात्रियों ने अपनी आकांक्षाओं के अनुसार शिक्षा प्राप्त नहीं की।

18. क्या शिक्षा के विकास से महिलाओं में जागरूकता आयी है?

सारणी संख्या 8

क्र0 सं0	शिक्षा के विकास से महिलाओं में जागरूकता का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	390	86.67
2.	नहीं	60	13.33
	योग	450	100.00

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के अनुसार 86.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार शिक्षा के विकास से महिलाओं में जागरूकता आयी है, जबकि 13.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार शिक्षा के विकास से महिलाओं में जागरूकता नहीं आयी है।

शिक्षा ग्रहण करते समय समस्याः

आमतौर पर शिक्षा ग्रहण करने के लिये ग्रामीण लोगों को दूरस्थ इलाकों पर जाना होता है, सदूर क्षेत्रों में शिक्षा लेने के लिये आमतौर पर ग्रामीण लोगों को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना होता है। पारिवारिक आय व साधनों की कमी होने के कारण ग्रामीण महिलायें शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं, किन्तु आधुनिक समय में ग्रामीण महिलायें हर समस्या को पार कर शिक्षा प्राप्त करती हैं।

2. क्या महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करते समय किसी प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ता है?

सारणी संख्या 9

क्र0 सं0	शिक्षा ग्रहण करते समय कठिनाई के सामने का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	210	46.67
2.	नहीं	240	53.33
	योग	450	100.00

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 46.67 ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करते समय विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है, जबकि 53.33 उत्तरदात्रियों के अनुसार ग्रामीण महिलाओं को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा है।

आपको शिक्षा ग्रहण करते समय किस प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ा है?

सारणी संख्या 10

क्र0 सं0	शिक्षा ग्रहण करते समय विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	स्कूल दूर होना	92	20.45
2.	कम उम्र में विवाह का होना	32	7.11
3.	आर्थिक रूप से असक्षम	86	19.11
4.	किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा	240	53.33
	योग	**450**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर उत्तरदात्रियों को शिक्षा ग्रहण करते समय निम्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ा 20.45 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को स्कूल दूर होने जैसे कठिनाई का सामना करना पड़ा, वहीं 7.11 उत्तरदात्रियों का कम उम्र में विवाह होने जैसी कठिनाई का सामना करना पड़ा, 19.11 प्रतिशत उत्तरदात्रियां आर्थिक रूप से असक्षम थीं, तथा 53.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।

क्या आपको विभिन्न समस्याओं के कारण शिक्षा को अधूरा छोड़ना पड़ा है?

सारणी संख्या 11

क्र0 सं0	महिलाओं को विभिन्न समस्याओं के कारण शिक्षा को अधूरा छोड़ने का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	93	20.67
2.	नहीं	357	79.33
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 20.67 उत्तरदात्रियों को विभिन्न कठिनाईयों के कारण अपनी शिक्षा को अधूरा छोड़ना पड़ा, जबकि 79.33 उत्तरदात्रियों ने विभिन्न समस्याओं के बावजूद के बाद भी अपनी शिक्षा को अधूरा नहीं छोड़ा।

क्या ससुराल पक्ष द्वारा बहुओं की अधूरी पढ़ाई को पूरा करने दिया जाता है?

सारणी संख्या 12

क्र0 सं0	बहुओं की पढ़ाई पूरा करने में ससुराल पक्ष के सहयोग का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	371	82.44
2.	नहीं	79	17.56
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के अनुसार उत्तरदात्रियों के अनुसार बहुओं को अधूरी पढ़ाई पूरा करवाने में ससुराल पक्ष का सहयोग होता है, जबकि 118 उत्तरदात्रियों का मानना है कि ससुराल पक्ष बहुओं का सहयोग नहीं करतीं हैं।

ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक भूमिकाओं के साथ–साथ पढ़ाईः

ग्रामीण महिलायें पढ़ने के साथ–साथ घर के कार्यों में अपना योगदान देती हैं, घर के कार्यों के निर्वाहन के पश्चात् भी महिलायें अपनी पढ़ाई के लिए पूरा समय देती हैं। यही कारण है कि आज बेटियां देश का नाम रोशन कर रहीं है।

आप/आपके घर की महिलायें पारिवारिक भूमिकाओं और शिक्षा के मध्य किस प्रकार सामंजस्य बिठाते हैं?

सारणी संख्या 13

क्र0 सं0	पारिवारिक भूमिकाओं और शिक्षा के मध्य सामंजस्य का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	दोनों भूमिकाओं का साथ–साथ निर्वाहन करके	136	30.22
2.	पारिवारिक भूमिकाओं के निर्वाहन के पश्चात्	64	14.22
3.	शिक्षा के लिये निश्चित समय–सारणी तय है	250	55.56
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर उत्तरदात्रियों के अनुसार 30.22 प्रतिशत महिलायें पारिवारिक भूमिकाओं और शिक्षा दोनों का साथ–साथ निर्वाहन करके सामंजस्य स्थापित करतीं हैं, जबकि 14.22 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार महिलायें पारिवारिक भूमिकाओं के निर्वाहन के पश्चात् शिक्षा को समय देती हैं, तथा 55.56 उत्तरदात्रियों के अनुसार शिक्षा के लिये निश्चित समय–सारणी तय रहती है।

7. क्या शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त समाज में महिलाओं को उच्च पद प्रतिष्ठा मिलती है?

सारणी संख्या 14

क्र0 सं0	शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त समाज में महिलाओं के उच्च पद–प्रतिष्ठा होने प्राप्त करने का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	420	93.33
2.	नहीं	30	6.67
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी से संकलित तथ्यों के आधार पर पता चलता है कि सर्वाधिक 93.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार शिक्षा के उपरान्त महिलाओं को समाज में उच्च पद–प्रतिष्ठा मिलती है, जबकि 6.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त समाज में महिलाओं को उच्च पद–प्रतिष्ठा नहीं मिलती है।

आप समाज में महिलाओं की प्रस्थिति को उठाने का साधन किसे मानती हैं?

सारणी संख्या 15

क्र0 सं0	समाज में महिलाओं की प्रस्थिति को उठाने के साधन का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अधिक भूमि/सम्पत्ति	26	5.78
2.	महिलाओं का सत्ता पर अधिकार	32	7.11
3.	उच्च शिक्षा	392	87.11
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी से संकलित तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 87.11 प्रतिशत उत्तरदात्रियां समाज में महिलाओं की प्रस्थिति को उठाने के साधन के रूप में उच्च शिक्षा को मानतीं हैं, जबकि 7.11 प्रतिशत उत्तरदात्रियां महिलाओं का सत्ता पर अधिकार को समाज में महिलाओं की प्रस्थिति को उठाने का साधन मानतीं हैं, तथा 5.78 प्रतिशत उत्तरदात्रियां अधिक भूमि/सम्पत्ति को समाज में महिलाओं की प्रस्थिति को उठाने के साधन को मानतीं हैं।

8. आपने/आपके परिवार की महिलाओं ने शिक्षा कहां ग्रहण की है?

सारणी संख्या 16

क्र0 सं0	शिक्षा ग्रहण करने के संस्थान का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सरकारी/अर्द्धसरकारी संस्थान से	406	90.22
2.	निजी संस्थान से	44	9.78
	योग	**450**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर अधिकतर 90.22 प्रतिशत महिलाओं ने सरकारी संस्थान से शिक्षा ग्रहण की है, जबकि 9.78 प्रतिशत महिलाओं ने निजी संस्थान से शिक्षा ग्रहण की है।

क्या सरकारी/अर्द्धसरकारी संस्थान से शिक्षा ग्रहण करने पर आपको या आपके परिवार की महिलाओं को किसी प्रकार का लाभ प्राप्त हुआ?

सारणी संख्या 17

क्र0 सं0	सरकारी/अर्द्धसरकारी संस्थान से शिक्षा ग्रहण करने पर लाभ का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	386	85.78
2.	नहीं	64	14.22
	योग	**450**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर अधिकतर 85.8 प्रतिशत महिलाओं ने सरकारी/अर्द्धसरकारी संस्थान से शिक्षा ग्रहण करने पर लाभ प्राप्त किया है, जबकि 14.22 प्रतिशत महिलाओं ने किसी प्रकार का लाभ प्राप्त नहीं हुआ है।

15. क्या आपके गांव में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र है/था?

सारणी संख्या 18

क्र0 सं0	क्या आपके गांव में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र है/था	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	365	81.11
2.	नहीं	85	18.89
	योग	**450**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर अधिकतर 81.11 प्रतिशत महिलाओं के गांव में प्रौढ शिक्षा केन्द्र है/था, जबकि 18.89 प्रतिशत महिलाओं के गांव में प्रौढ शिक्षा केन्द्र नहीं है/था।

19. क्या अशिक्षित महिलायें अपने शिक्षित बच्चों के सम्पर्क में रहने के कारण शिक्षा एवं उसकी महत्व को स्वीकार करने लगी हैं?

सारणी संख्या 19

क्र0 सं0	क्या अशिक्षित महिलायें अपने शिक्षित बच्चों के सम्पर्क में रहने के कारण शिक्षा एवं उसकी महत्व को स्वीकार करने लगी हैं:	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	432	96.00
2.	नहीं	18	4.00
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 96.00 प्रतिशत अशिक्षित उत्तरदात्रियों का मानना है कि वे अपने शिक्षित बच्चों के सम्पर्क में रहने के कारण शिक्षा एवं उसकी महत्ता को स्वीकार करने लगी है, जबकि 4.00 प्रतिशत उत्तरदात्रियां इस बात से इन्कार करती हैं।

क्या पहले की तुलना में शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आया है?

सारणी संख्या 20

क्र0 सं0	क्या पहले की तुलना में शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आया है?	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	442	98.22
2.	नहीं	08	1.78
	योग	450	100

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों से ज्ञात होता है कि 98.22 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार पहले की तुलना में शिक्षा व्यवस्था में परिवर्त आया है, जबकि 1.78 प्रतिशत के अनुसार शिक्षा व्यवस्था में पहले की तुलना में परिवर्तन नहीं आया है।

शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन किस कारण आया है?

सारणी संख्या 21

क्र0 सं0	शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन के कारण का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	बेहतर शिक्षा प्रणाली	152	33.78
2.	नवीन स्कूलों का विकास	78	17.33
3.	समाज में शिक्षा के महत्व के कारण	220	48.89
	योग	450	100

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 33.78 उत्तरदात्रियों के अनुसार यह परिवर्तन बेहतर शिक्षा प्रणाली के कारण आया है, जबकि 17.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार नवीन स्कूलों के विकास से शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आया है, जबकि 48.89 प्रतिशत सर्वाधिक उत्तरदात्रियों के अनुसार समाज में शिक्षा के महत्व के कारण शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आया है।

संचार साधनः

आज टेलीविजन व संचार क्रांति के परिणामस्वरूप उपभोक्तावादी संस्कृति पर प्रसार हुआ है जिसका प्रभाव ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर पड़ना स्वाभाविक है। ग्रामीण महिलाएं पाश्चात्य परिधान पहन रही हैं और बा*á* देशों के आचरण का भी अनुसरण कर रही है। ग्रामीण महिलाएं अपने पहनावे व बोलचाल में परिवर्तन ला रही हैं।

12. क्या आप स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करती हैं?

सारणी संख्या 22

क्र0 सं0	स्मार्ट फोन के इस्तेमाला का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	392	87.11
2.	नहीं	58	12.89
	योग	450	100

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर सर्वाधिक 87.11 प्रतिशत उत्तरदात्रियां स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करती हैं, जबकि 12.89 प्रतिशत उत्तरदात्रियां स्मार्ट फोन का इस्तेमाल नहीं करतीं हैं।

13. आप स्मार्ट फोन का इस्तेमाल किस लिए करती हैं?

सारणी संख्या 23

क्र0 सं0	स्मार्ट फोन का इस्तेमाल	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	शिक्षा संबंधी जानकारी के लिये	222	49.33
2.	अन्य कार्यों के लिए	170	37.78
4.	स्मार्ट फोन का इस्तेमाल नहीं करते	58	12.89
	योग	450	100

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 49.33 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदात्रियां द्वारा स्मार्ट फोन का इस्तेमाल शिक्षा संबंधी जानकारी के लिए किया जाता है, जबकि 37.78 उत्तरदात्रियों द्वारा स्मार्ट फोन का इस्तेमाल अन्य कार्यों के लिये किया जाता है, 12.89 प्रतिशत उत्तरदात्रियां स्मार्ट फोन का इस्तेमाल नहीं किया करती हैं।

क्या संचार के नवीन संसाधनों के फलस्वरूप आपमें शैक्षिक जागरूकता आयी है?

सारणी संख्या 24

क्र0 सं0	संचार के नवीन संसाधनों के फलस्वरूप शैक्षिक जागरूकता का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	426	94.67
2.	नहीं	24	5.33
	योग	450	100.00

उपरोक्त सारणी में संकलित के अनुसार 94.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों में संचार के नवीन संसाधनों के फलस्वरूप शैक्षिक जागरूकता आयी है, जबकि 5.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों में संचार के नवीन संसाधनों के फलस्वरूप शैक्षिक जागरूकता नहीं आयी है।

आपको/आपके घर की महिलाओं को किस प्रेरणा ने शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया?

सारणी संख्या 25

क्र0 सं0	शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरण का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा ने	198	44.00
2.	अच्छी नौकरी के अवसरों ने	144	32.00
3.	सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति के साधनों ने	108	24.00
	योग	450	100

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 44.00 प्रतिशत महिलाओं को 'उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा ने' शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया, जबकि 32.00 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार 'महिलाओं को अच्छी नौकरी के अवसरों ने' शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया, तथा 24.00 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार महिलाओं को 'सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति के साधनों ने' शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।

क्या आप केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा संचालित शैक्षिक योजनाओं के बारे में जानकारी रखती हैं?

सारणी संख्या 26

क्र0 सं0	केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा संचालित शैक्षिक योजनाओं की जानकारी का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	326	72.44
2.	नहीं	124	27.56
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 72.44 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा संचालित शैक्षिक योजनाओं के बारे में जानकारी है, जबकि 27.56 प्रतिशत उत्तरदात्रियों की केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी नहीं है।

आपका शिक्षा ग्रहण करने का मुख्य आधार क्या है?

सारणी संख्या 27

क्र0 सं0	शिक्षा ग्रहण करने का मुख्य आधार का विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारना	196	43.55
2.	पुरूषों के समान प्रस्थिति प्राप्त करना	98	21.78
3.	बेहतर रोजगार प्राप्त करने के लिये	156	34.67
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर महिलाओं का शिक्षा ग्रहण करने का मुख्य आधार निम्न है– सर्वाधिक 43.55 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारना, 21.78 उत्तरदात्रियों के अनुसार पुरूषों के समान प्रस्थिति प्राप्त करना है, जबकि 34.67 उत्तरदात्रियों के अनुसार महिला शिक्षा ग्रहण करने का आधार बेहतर रोजगार प्राप्त करना है।

क्या आप मानती हैं कि ग्रामीण समाज में स्त्री शिक्षा का महत्व वर्तमान समय में बढ़ गया है?

सारणी संख्या 28

क्र0 सं0	ग्रामीण समाज में स्त्री शिक्षा का महत्व वर्तमान समय में बढ़ने का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	450	100
2.	नहीं	00	00
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर पूरे 100 प्रतिशत उत्तदात्रियों के अनुसार ग्रामीण समाज में स्त्री शिक्षा का महत्व वर्तमान समय में बढ़ गया है।

वर्तमान समय में ग्रामीण समाज में स्त्री शिक्षा बढ़ने का कारण हैं?

सारणी संख्या 29

क्र0 सं0	वर्तमान समय में ग्रामीण समाज में स्त्री शिक्षा बढ़ने के कारण का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	वैश्विक स्तर पर महिलाओं की पहुंच को देखकर	170	37.78
2.	समाज में महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकारों को लेकर	96	21.33
3.	महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधिक प्रवृत्ति के प्रति सतर्कता को लेकर	101	22.45
4.	आत्मनिर्भरता के लिए	83	18.44
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 37.78 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि ग्रामीण समाज में स्त्री शिक्षा बढ़ने का कारण 'वैश्विक स्तर पर महिलाओं की पहुंच को देखकर' है, जबकि 21.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि समाज में महिलाओं को पुरूषों के समान शिक्षा के अधिकार प्राप्त होने के कारण, 22.45 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का कहना है कि महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधिक प्रवृत्ति के प्रति सतर्कता को लेकर शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है, जबकि 18.44 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार ग्रामीण समाज में स्त्री शिक्षा बढ़ने का कारण महिलाओं का आत्मनिर्भर बनना है।

क्या आपके क्षेत्र में शिक्षा के प्रति जागरूकता को लेकर सरकार द्वारा कोई कार्यक्रम आयोजित किया जाता है?

सारणी संख्या 30

क्र0 सं0	शिक्षा के प्रति जागरूकता को लेकर सरकार द्वारा कार्यक्रमों का आयोजन का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	377	83.78
2.	नहीं	73	16.22
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 83.78 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का कहना है कि उनके क्षेत्र में शिक्षा के प्रति जागरूकता को लेकर सरकार द्वारा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जबकि 16.22 प्रतिशत उत्तरदाताओं का जवाब नहीं में है।

देश में महिलाओं की बेहतर शिक्षा के लिए आपका क्या सुझाव है?

सारणी संख्या 31

क्र0 सं0	महिलाओं की बेहतर शिक्षा के प्रति उत्तरदात्रियों के सुझाव का विवरण	उत्तरदात्रियाँ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	लड़कियों को शिक्षा के लिये प्रेरित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम करवाना चाहिये	222	49.33
2.	लड़कियों के लिए सभी स्तरों पर निःशुल्क शिक्षा	88	19.56
3.	अधिक से अधिक शिक्षण संस्थानों की स्थापना होनी चाहिये	89	19.78
4.	अन्य	51	11.33
	योग	**450**	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि उत्तरदात्रियों के अनुसार महिलाओं की बेहतर शिक्षा के लिए निम्न सुझाव होने चाहिये–49.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार लड़कियों को शिक्षा के लिये प्रेरित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम करवाना चाहिये, 19.56 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार लड़कियों के लिए सभी स्तरों शिक्षा निःशुल्क होनी चाहिये, 19.78 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार अधिक से अधिक शिक्षण संस्थानों की स्थापना होनी चाहिये तथा 11.33 प्रतिशत अन्य प्रकार के सुझाव देते हैं।

निष्कर्षः

प्रस्तुत तथ्यों के संकलन से स्पष्ट होता है कि स्त्रियों की सामाजिक प्रस्थितियों और भूमिकाओं में परिवर्तन आया है और साथ ही साथ समाज का दृष्टिकोण भी इनके प्रति बदला है। आज स्त्रियों को वो सारे अधिकार और सम्मान मिल गयें हैं जिनकी वो हकदार थीं। आज स्त्रियां पुरूषों के साथ सहयोगी बनकर उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। आज स्त्रियां नई–नई परिस्थितियों को प्राप्त करके अपनी भूमिकाओं का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रही है। आज स्त्रियों ने अपने आप को पुरानी दकियानूसी परम्पराओं से आजाद कर लिया है तथा स्वयं के अधिकारों की मांग के लिए आगे आ रही है। उपरोक्त सारणी संख्या 1 के आधार पर ग्रामीण समाज में 450 महिलाओं पर सर्वाधिक 29.78 प्रतिशत महिलायें स्नातक स्तर की हैं, उसके बाद 22.45 प्रतिशत महिलायें स्नातकोत्तर स्तर की हैं, इससे ज्ञात होता है कि महिलायें शिक्षा के प्रति जागरूक हुईं हैं और अपने शिक्षा के स्तर को बढ़ा रहीं हैं। सारणी संख्या 2 के आधार पर 20–30 आयु वर्ग की महिलायें सर्वाधिक (45.11प्रतिशत) शिक्षा के स्तर में आगे बढ़ रही हैं, अर्थात नयी पीढ़ी की महिलायें शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हैं। सारणी संख्या 3 के आधार पर सामान्य जाति की सर्वाधिक 134 में से 89 महिलायें स्नातक स्तर की ग्रहण किये हुए है, वहीं अनुसूचित जाति की 134 में से 35 उत्तरदात्रियाँ और अन्य पिछड़े वर्ग की 10 उत्तरदात्रियाँ स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण किये हुए है। सारणी संख्या 4 के आधार पर आज सर्वाधिक 84.44 महिलायें पुरूषों के समान शैक्षिक अधिकार प्राप्त किये हुए है। सारणी संख्या 5 के आधार पर 84.44 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के परिवार के सदस्य महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूक हुए हैं। सारणी संख्या 6 के आधार पर 81.33 उत्तरदात्रियों के माता–पिता का अपनी पुत्रियों की शिक्षा के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण है। सारणी संख्या 7 के आधार पर सर्वाधिक 68.22 उत्तरदात्रियों ने अपनी आकांक्षाओं के अनुसार शिक्षा प्राप्त की है। सारणी संख्या 8 के आधार पर सर्वाधिक 86.67 उत्तरदात्रियों के अनुसार शिक्षा के विकास से महिलाओं में जागरूकता आयी है। सारणी संख्या 9–10–11 के आधार पर महिलायें विभिन्न कठिनाईयों के बावजूद भी अपनी शिक्षा जारी रखतीं हैं। सारणी संख्या 12 के आधार पर सर्वाधिक 82.44 उत्तरदात्रियों द्वारा ससुराल पक्ष द्वारा बहुओं को अधूरी पढ़ाई को पूरा करने में पूर्ण सहयोग दिया जाता है। सारणी संख्या 13 के आधार पर सर्वाधिक 55.56 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें पारिवारिक निर्वाहन के साथ–साथ अपनी पढ़ाई के लिये भी समय–सारणी तय रखती हैं। सारणी संख्या 14 के आधार पर शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त समाज में महिलाओं को उच्च पद–प्रतिष्ठा मिलती है, और उच्च शिक्षा ही महिलाओं की पद–प्रस्थिति को उठाने का साधन है। सारणी संख्या 19 के आधार पर आज अशिक्षित महिलायें अपने शिक्षित बच्चों के सम्पर्क में रहने के कारण शिक्षा एवं उसके महत्व को स्वीकार करने लगी हैं। सारणी संख्या 20 के आधार पर आधुनिक समय में ग्रामीण समाज में पहले की तुलना में महिलाओं की शिक्षा में

परिवर्तन आया है। सारणी संख्या 24 के आधार पर आज नवीन संचार साधनों के फलस्वरूप महिलाओं में जागरूकता आयी है। सारणी संख्या 28 के आधार पर वर्तमान समय में स्त्री शिक्षा का महत्व ग्रामीण समाज में बढ़ गया है।

अतः आज विभिन्न प्रकार के सामाजिक प्रयास के फलस्वरूप ग्रामीण समाज में महिलाओं की शैक्षिक प्रस्थिति में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों, संचार के नवीन साधनों व सरकारी प्रयास से यह सब सफल हुआ है। शिक्षा के कारण ही आज महिलायें वैश्विक स्तर पर देश का नाम रोशन कर रहीं हैं। शिक्षा ही महिलाओं की स्थिति को सुधारने व उनकी पद–प्रस्थिति को ऊँचा उठाने का आधार बिन्दु है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Jumin,M.M.(1953): Some Principles of Startify Cation,A Critical Analysis American Sociology Review 18,p 387-394

2. सिंह, निशान्त, (2009), भारतीय महिलाएँ : एक सामाजिक अध्ययन, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ.सं.– 78

3. अखिल भारतीय सर्वेक्षण 2019–20

4. राधाकृष्णन आयोग।

5. **भारत के जनगणना आयुक्त और महापंजीयक कार्यालय द्वारा** 2011

6. **golobaldata.com**

7. स्त्रोतः **District Census Handbook Garhwal 2011 Page 30**

8. सांख्यिकीय पत्रिका पौड़ी गढ़वाल वर्ष–2021, कार्यालय अर्थ एवं सांख्याधिकारी पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड), पेज न0 22

9. स्त्रोतः **District Census Handbook Garhwal 2011 Page no. 40**

10. शर्मा, प्रज्ञा (2001), विकास और महिला सशक्तिकरण, अविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर

11. अजिज, एन.पी. अब्दुल 2015, भारत में महिला सशक्तिकरण, अनमोल प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

12. रत्तू, डॉ. कमला, 2000, मीडिया क्रान्ति और महिलायें, नेशनल प्रकाशन हाउस, जयपुर एवं दिल्ली।

13. रामानम्बा एम.वी. 2005, मीडिया और महिला विकास, अनमोल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

14.Garg,Mridula(2008)."World As Censor",Economics & Political Weekly.35(18):57